9

पहाड़ी चित्रकला
Pahari School

9.0 भूमिका

पंजाब, गढ़वाल और जम्मू की पहाड़ी रियासतों में पनपी चित्रकला परम्परा 'पहाड़ी कलम' अथवा पहाड़ी चित्र शैली के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ 17वीं से 19वीं शताब्दी तक यह कला विकसित होती रही। पहाड़ी चित्रकला शैली को प्रारम्भ में 'जम्मू कलम' कहा गया। मुगलों के भारत आगमन से पूर्व यहाँ की कला लोक–कला से प्रभावित थी। लघु–चित्रों का कोई केन्द्र नहीं था और न ही अलग–अलग शैलियाँ। मुगलों के परिधान, दरबारी शान–शौकत, अदब–कायदे आदि का यहाँ की संस्कृति पर प्रभाव पड़ा। रोजी–रोटी की खोज में दिल्ली के कलाकार इन पहाड़ी रियासतों की ओर आए। मुगल शैली ने पहाड़ी रमणीय स्थानों तथा प्राकृतिक चित्रण में पूर्णता प्राप्त की। पहाड़ी चित्रकला ने लोक–कला के रूप में जन्म लिया और उसका विकास कुशल चित्रकारों के हाथों हुआ। यहाँ के लघु–चित्रों में कला, साहित्य और संगीत का अनुपम संगम मिलता है। इस शैली का क्षेत्र जम्मू से टिहरी और पठानकोट से कुल्लू तक रहा है। सन् 1678 ई॰ से पूर्व भी साधारण रूप में चित्रकला यहाँ विद्यमान थी, किन्तु पहाड़ी शैली को जन्म देने वाले दिल्ली दरबार के वे कुशल कलाकार थे जो राजस्थानी और मुगल–दोनों शैलियों की बारीकियों से परिचित थे और यहाँ के पहाड़ी राज्य बसोहली और गुलेर में आ कर बस गए। उन्हें राजाओं का संरक्षण प्राप्त था। दूसरे राज्यों की कला–शैलियों और परिवर्तन का प्रभाव भी एक दूसरे के ऊपर पड़ा और लघु–चित्रों के निर्माण का क्षेत्र विकसित होता गया।

बसोहली, गुलेर, कांगड़ा, चम्बा, मण्डी, कुल्लू, विलासपुर, जम्मू, नालागढ़, गढ़वाल, कश्मीर, टीरा–सुजानपुर, नादौन, धरमसाल आदि पहाड़ी चित्रकला के प्रमुख केन्द्र थे।

लघु–चित्र हाथ से बने कागज़ पर बनाए गए। राजस्थान की संस्कृति, मध्यकाल के भक्ति आन्दोलन और रीतिकालीन श्रंगारिक साहित्य के प्रभाव से इन पहाड़ी रियासतों की कला, साहित्य और संगीत से भी अछूती न रही। ध्यान, पूजा, अर्चना, उपहार, दहेज, अपनी व्यक्तिगत छवि (पोट्रेट), वैभव–प्रदर्शन आदि के लिए हजारों लघु–चित्र बनाए गए। इन पहाड़ी चित्रों में प्राकृतिक सुषमा और नारी–सौंदर्य देखते ही बनता है।

लघु–चित्रण–विधि

लघु–चित्र के लिए कागज, बाँस के टुकड़ों, टाट के टुकड़ों, रूई और सन (तूल) आदि से हाथों से बनाया जाता था। इसे 'सियालकोटी' कागज कहते थे। राजस्थानी लघु चित्रों की तरह इन कागजों पर भी रेखांकन के पश्चात् सफेद रंग लगाया जाता था और सूखने के पश्चात् चिकने गोल पत्थर से घुटाई करके सतह को चिकना कर लिया जाता था। फिर भूरे या काले रंग से रेखायें लगा ली जाती थीं। इसके बाद पृष्ठभूमि, आकृति, भवन आदि में रंग भरे जाते थे। फिर मोटी पतली रेखाएं बनाते हुए आकृतियों को भावपूर्ण बनाया जाता था। लघु–चित्रों की कई प्रतिलिपियाँ बनाने के लिए स्टेंसिल (खाके) का प्रयोग किया जाता था, जो दफ्ती या हिरण के चमड़े पर बनाया जाता था।

पहाड़ी लघु–चित्रों (मिनियेचर पेंटिंग) की विशेषता

अधिकतर चित्रों में एक चश्म (साइड फेस) चेहरे ही बनाए गए हैं। दरबार का सुन्दर चित्रण हुआ है। पहाड़ी परंपरागत आभूषणों का प्रयोग स्त्री–पुरूष दोनों द्वारा दिखाया गया है। रंगों पर मुगल चित्र शैली का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है। रेखाएं बारीक, अटूट, कोमल तथा लयपूर्ण हैं। रंगों, मोटी–पतली रेखाओं का प्रयोग तथा प्राकृतिक सौंदर्य का अत्यंत सूक्ष्म तथा मनोहारी चित्रण हुआ है। भवनों में गुम्बज, छज्जा, मेहराब, खिड़की, झरोखे, आँगन, छत तथा सुन्दर उद्यान आदि का चित्रण हुआ है। खुला आसमान, चाँदनी रात तथा काले–काले घुमड़ते बादलों तथा उनमें चमकती विद्युत प्रभा, सुन्दर पशु–पक्षी, हरी–भरी पहाड़ियाँ और घने वृक्ष पहाड़ी लघुचित्रों के सौंदर्य को द्विगुणित कर देते हैं।

9.1 उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने पर आप इस योग्य हो जाएँगे कि –

- पहाड़ी चित्रकला तथा लघु–चित्रों की पृष्ठभूमि, क्षेत्र, काल, नामकरण, दिल्ली दरबार के कलाकारों का योगदान, धार्मिक और साहित्यिक रचनाओं का चित्रकला पर प्रभाव आदि का संक्षिप्त वर्णन कर सकेंगे;
- दिए गए लघु चित्रों के विषय में बता सकेंगे;
- राजस्थानी तथा पहाड़ी लघु चित्रों के अन्तर को स्पष्ट कर सकेंगे;
- पहाड़ी लघु चित्रों के आधार पर इस शैली की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- दिए गए लघु चित्रों की शैली, स्थान तथा निर्माण सामग्री का उल्लेख कर सकेंगे;
- दिए गए लघु चित्रों को बनाने वाले चित्रकारों का नाम बता सकेंगे।

राधा की प्रतीक्षा में कृष्ण

9.2 राधा की प्रतीक्षा में कृष्ण (बसोहली – पहाड़ी शैली)

शीर्षक	–	*राधा की प्रतीक्षा में कृष्ण*
चित्रण–काल	–	*लगभग 1730 ई.*
चित्रण – विधि	–	*टेम्परा*
सामग्री	–	*हाथ से बना सियालकोटी कागज़, रंग, ब्रुश*
आकार	–	*12.2"x8.1"*
विषय–वस्तु	–	*श्री राधा की प्रतीक्षा में कुंज में बैठे हुए श्री कृष्ण को दिखाया गया है।*
चित्रकार	–	*मानकू*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।*

सामान्य परिचय

ग्यारहवीं शताब्दी में बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन के राजकवि जयदेव द्वारा रचित 'गीत गोविन्द' को संस्कृत काव्य में उच्च स्थान प्राप्त है। गीत गोविन्द में मुख्यतः तीन पात्र हैं – राधा, कृष्ण तथा दूती (राधा की सखी या सेविका) । यह दूती दोनों ओर से संदेश का आदान – प्रदान करती है। यह दूती गुरू का प्रतीक है जो आत्मा का परमात्मा से मिलन कराती है। गीत गोविन्द के आधार पर पहाड़ी चित्रकला में बहुत से चित्र बनाए गए। बसोहली और काँगड़ा के लघु–चित्र इनमें उत्कृष्ट हैं।

प्रस्तुत चित्र गीत–गोविन्द के आधार पर बनाया गया है। चित्र में दायीं ओर श्री कृष्ण एक कुँज में राधा की प्रतीक्षा में बैठे हुए हैं। राधा की दो सखियाँ राधा को कृष्ण के पास ले जाने का प्रयास कर रही हैं। एक सखी राधा को समझा रही है और दूसरी सखी राधा का एक हाथ पकड़ कर उसे उठा रही है। राधा एक हाथ से अपनी ओढ़नी से अपना मुख छिपाने का प्रयास कर रही है। उसके मुख पर लज्जा का भाव है। आँखें सुन्दर, बदन छरहरा, पाँव में पायल तथा महावर लगा हुआ, बाल खुले हुए, गले में सफेद मोती की माला, कर्णफूल, कंगन तथा अन्य आभूषण, रंग खूब गोरा लेकिन थोड़ा पीलापन लिए हुए है। दायीं ओर की भूमि ऊँची नीची, तथा छोटे घने वृक्ष। बाँयी ओर एक फूल का पौधा। आगे जलाशय, पीछे भूमि हल्के भूरे रंग में, गहरे नीले रंग के आकाश में सफेद बादल। कृष्ण के शरीर का रंग नीला, आँखें सुन्दर, सिर पर मुकुट, गले में सफेद लम्बी मोती की माला तथा अन्य आभूषण धारण किए हुए हैं। वृक्षों की आकृति नुकीली तथा पत्तियों की रेखाएँ स्पष्ट हैं।

पाठगत प्रश्न (9.2)

1. नीचे लिखे गए उत्तरों में से जो उत्तर ठीक हों, उन पर सही (√) का निशान लगाइये–

   क – प्रस्तुत चित्र निम्नलिखित शैली में बनाया गया है–

   किशनगढ़ शैली, कांगड़ा शैली, बसोहली शैली, चम्बा शैली।

   ख – प्रस्तुत चित्र निम्नलिखित ग्रंथ के आधार पर चित्रित किया गया है–

   श्रीमद्भागवत्, महाभारत, गीत–गोविन्द, सतसई, रसिक प्रिया।

   ग – निम्नलिखित का सही मिलान कराइए।

(i) राधा	(i) आत्मा
(ii) कृष्ण	(ii) गुरू
(iii) गोपी (सखी)	(iii) परमात्मा

चम्बा राजा जीत सिंह के साथ कांगड़ा राजा संसार चन्द

9.3 चम्बा राजा जीत सिंह के साथ कांगड़ा राजा संसार चन्द (कांगड़ा शैली)

शीर्षक	–	*चम्बा राजा जीत सिंह के साथ कांगड़ा राजा संसार चन्द (पोट्रेट)*
चित्रण–काल	–	*सन् 1800 ई.*
चित्रण–विधि	–	*टेम्परा*
सामग्री	–	*हाथ से बना कागज, रंग, ब्रश*
आकार	–	*28.5x 22 सें.मी.*
विषय–वस्तु	–	*राजाओं, दरबारियों के व्यक्ति–चित्र (पोट्रेट) बनाने की परम्परा इस शैली में रही है। दो राजाओं का यह सम्मिलित चित्र परस्पर घनिष्ट सम्बन्धों का प्रतीक है।*
चित्रकार	–	*नैनसुख*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।*

सामान्य परिचय

राजा संसार चन्द कांगड़ा के राजा थे। इन्होंने कांगड़ा राज्य को संगठित किया और चित्रकारों, शिल्पियों आदि को संरक्षण प्रदान किया। इनका काल चित्रकला का स्वर्णकाल कहा जाता है। सन् 1795 ई॰ तक कांगड़ा चित्रकला ने खूब प्रसिद्धि पायी। चम्बा के राज्य से कांगड़ा का अच्छा सम्बन्ध रहा। चम्बा के राजा जीत सिंह ने भी चम्बा शैली के विकास में योगदान दिया। प्रस्तुत चित्र के चित्रकार नैनसुख कांगड़ा के प्रसिद्ध चित्रकार पंडित सेओ (शिव) के पुत्र थे।

दो पहाड़ी राजाओं के वार्तालाप का यह चित्र परस्पर अच्छे संबंधों का प्रतीक है। चित्र में एक बड़े से मसनद (गोल बेलनाकार तकिया) के सहारे दोनों राजा संसार चन्द और जीत सिंह बैठे हुये हैं। दोनों के हाथों में फरशी (जमीन पर रखने वाला, धातु का बना लम्बा हुक्का) की नली है। जीत सिंह गुलाबी रंग का अँगरखा तथा पाजामा पहने हुए हैं। आगे इनके पैरों के पास दो लाल रंग के कुशन रखे हुये हैं। कालीन का रंग हल्का पीला है। पृष्ठभूमि में पीले रंग का मैदान तथा ऊपर नीले रंग का आकाश दिखाया गया है। दोनों राजाओं के दोनों ओर दो सेवक बालों से बने हुए चँवर लिए हुए उन्हें पंखा झल रहे हैं। चित्र सुन्दर है और व्यक्ति–चित्रों (पोट्रेट) की श्रेणी में आता है। पहाड़ी चित्रकला में भी राजस्थानी चित्रकला की तरह, बहुत से व्यक्ति–चित्र बनाए गए।

पाठगत प्रश्न (9.3)

नीचे लिखे गए उत्तरों में से जो ठीक उत्तर हो, उस पर सही (√) का निशान लगाइये–

क– प्रस्तुत चित्र के चित्रकार हैं————————

गुमान, पंडित सेओ, निहालचन्द, नैनसुख, मानकू।

ख– प्रस्तुत चित्र निम्नलिखित शैली में बनाया गया है————————

चम्बा, बसोहली, गुलेर, कांगड़ा, कुल्लू।

ग– यह चित्र निम्नलिखित श्रेणी में आता है————————

प्रेम–कथा, धार्मिक चित्र, व्यक्ति–चित्र (पोट्रेट), दैनिक जीवन, श्रृंगारिक चित्र।

9.4 सारांश

पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों में बौद्ध, हिन्दू तथा सिख धर्मों का समन्वय हुआ। पहाड़ी चित्रकला को जन्म देने वाले दिल्ली दरबार के कलाकार थे, जो राजस्थानी तथा मुगल दोनों चित्रकला शैलियों में पारंगत थे। इस पहाड़ी शैली का इतिहास 17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक फैला है। इस शैली का क्षेत्र जम्मू से टिहरी और पठानकोट से कुल्लू तक था। पहाड़ी लघु–चित्र हाथ से बने कागज पर बनाए जाते थे। इन चित्रों के विषय धार्मिक, साहित्यिक, शृंगारिक ग्रंथ, प्रेम कथाएं, राग–रागिनियाँ, नायक–नायिका भेद, गीत गोविन्द, सतसई, रसिक प्रिया तथा बारहमासा हैं। चित्रों के रंग कलाकार स्वयं बनाते थे। ये रंग खनिज तथा वनस्पति से तैयार किए जाते थे। पहाड़ी चित्रकला की विशेषता में प्राकृतिक सुषमा, भाव चित्रण तथा नारी–सौंदर्य प्रमुख तत्व हैं।

9.5 माडल प्रश्न

प्रश्न 1. पहाड़ी लघु–चित्र किन–किन विषयों पर बनाए गए?

2. पहाड़ी चित्रों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. गीत–गोविन्द पर आधारित - **'राधा की प्रतीक्षा में कृष्ण'** -चित्र का वर्णन कीजिए।

4. पहाड़ी लघु–चित्रण विधि का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर –

9.2 क – बसोहली शैली।

ख – गीत–गोविन्द।

ग – राधा–आत्मा, कृष्ण–परमात्मा, गोपी–गुरू

9.3 क– नैनसुख

ख– कांगड़ा

ग– व्यक्ति–चित्र (पोट्रेट)

9.7 शब्दकोष

1. सियालकोटी – पहाड़ों पर हाथ से बने कागज को सियालकोटी कागज़ कहा गया।
2. स्टेंसिल (खाके) – दफ्ती या हिरण के चमड़े पर आकृति बना कर उसकी रेखाओं पर छेद कर लेते थे और फिर कोयले के चूरे, गेरू या रंग छिड़क कर अन्य कागज़ या दीवार पर आकृति को उतार लेते थे। इससे चित्र की कई प्रतियाँ तैयार की जाती थीं।
3. टेम्परा – सूखी सतह पर जल रंगों से चित्रण।
4. खनिज रंग – सोना, चाँदी, अबरक, कोयला आदि से प्राप्त रंग।
5. वानस्पतिक रंग – फूल–पत्ती, कीट–पतंग से प्राप्त रंग।